कला दीर्घा

KALA DIRGHA

कला दीर्घा

KALA DIRGHA

दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2002, वर्ष 2, अंक 4
Six monthly Journal of Visual Art, April 2002, Vol 2, Issue 4

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, लखनऊ
UTKARSH PRATISHTHAN, LUCKNOW

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की त्रैमासिक पत्रिका, अप्रैल 2002, वर्ष 2, अंक 4
Six monthly Journal of Visual Art, April 2002, Vol 2, Issue 4

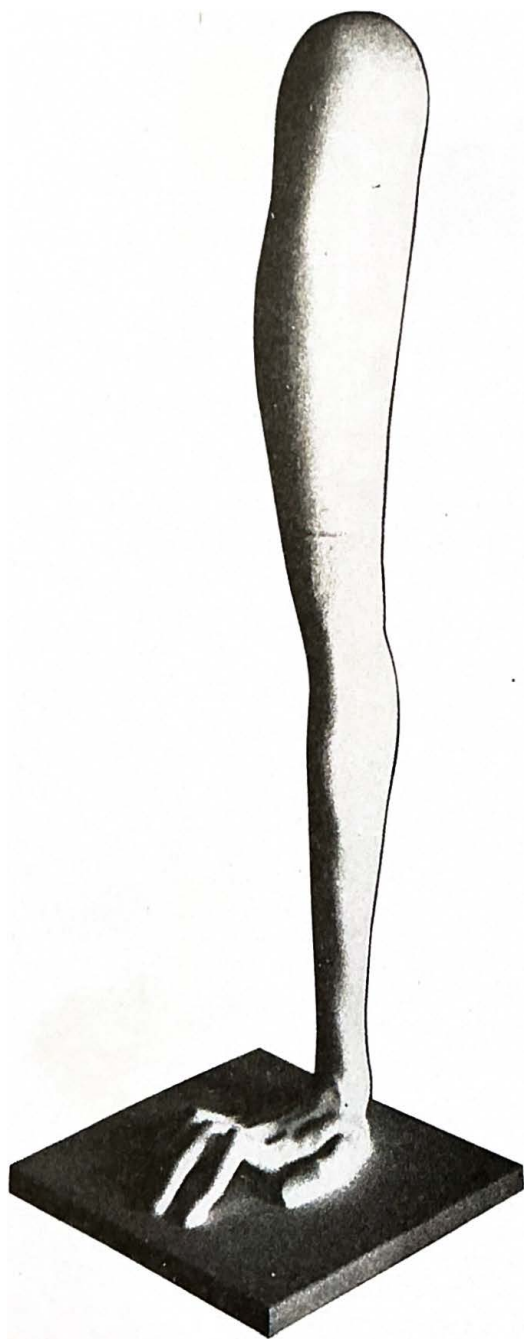

कृष्ण छत्पर, आर्म, प्लास्टर, 1970
Krishna Chhatpar Arm, Plaster, 1970

सम्पादक — *Editor*

अवधेश मिश्र — **Awadhesh Misra**

12/179 इंदिरा नगर, लखनऊ – 226016 — 12/179, Indira Nagar, Lucknow – 226016

✆0522–358007, e-mail : awadheshmisra@yahoo.co.in

सह सम्पादक — *Co-Editors*

एस.के. श्रीवास्तव — **S.K. Srivastava**

डा. शेफाली भटनागर — **Dr. Shefali Bhatnagar**

आवरण चित्र–प्रथम — *Cover Painting-First*

राम कुमार, लैंडस्केप, 2000 — **Ram Kumar**, Landscape, 2000

आवरण चित्र–चतुर्थ — *Cover Painting-Fourth*

अंजन चक्रवर्ती, देवी, 2002 — **Anjan Chakraverty**, Devi, 2002

प्रतिनिधि–दिल्ली — *Representative-Delhi*

हेमराज — **Hemraj**

✆ 011–226027 e-mail : rajhemraj@rediffmail.com

प्रकाशक — *Publisher*

अंजू सिन्हा — **Anju Sinha**

अध्यक्ष — Chairperson

उत्कर्ष प्रतिष्ठान, 1/95 विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010 — *Utkarsh Pratisthan*, 1/95, Vineet Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010

✆ 0522–725942 e-mail : anju1965@yahoo.com

मुद्रक — *Printed at*

प्रकाश पैकेजर्स, 257 गोलागंज, लखनऊ–226018 — Prakash Packagers, 257-Golaganj, Lucknow-226018

✆ 0522–221011 e-mail : prakashpackagers@yahoo.com

वितरक — *Distributor*

वाणी प्रकाशन, 21A, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 — Vani Prakashan, 21A, Dariyaganj, New Delhi-110002

✆ 011–3273167 e-mail : vani_prakashan@yahoo.com

Price : **Rs. 100/-; US $ 10; UK £ 6**

सम्पादन/संचालन अवैतनिक ***Editor/Publisher honorary***

प्रकाशित सामग्री के लिये सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं। किसी विवाद के लिये न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा। प्रकाशित सामग्री के किसी अंश का पुनर्प्रकाशन वर्जित है।

The editor is not responsible for the published views of the authors of the article. For any legal dispute the matter will be in the jurisdiction of the Lucknow Courts. Reproduction in any form is prohibited.

कला दीर्घा
KALA DIRGHA
दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2002, वर्ष 2, अंक 4
Six monthly Journal of Visual Art, April 2002, Vol 2, Issue 4

सम्पादकीय 5

विनोद भारद्वाज – सिर्फ सामना किया, मुड़ के नहीं देखा 7

मंगलेश डबराल – रामकुमार के स्पन्दन 10

एच.एन. मिश्र – बनारस के भित्ति चित्र शास्त्रीय कला के लौकिक अनुकरण हैं 14

अनिल सिन्हा – मोहम्मद सलीम के काम में तरलता और गहराई 25

रमेश कुन्तल मेघ – किमाकाराकृति (ग्रोटस्क) 32

शमशेर बहादुर सिंह – अमूर्त कला 36

कला गतिविधियाँ एवं प्रकाशन 39

Ratan Parimoo – Baroda School's contribution to contemporary art trends 49

Keshav Malik – Conversations with a Painter - K. Khosa 56

Srikant B. Dabhade – Colour- An Important Element in Visual Image 59

Sovon Som – Of Anomie and Indecision 63

Anjan Chakraverty – Neo-Tantra etchings of Dipak Banerjee 73

MS Datar/SK Srivastava – **P. Gauri Shanker** The world of Art is enough 76

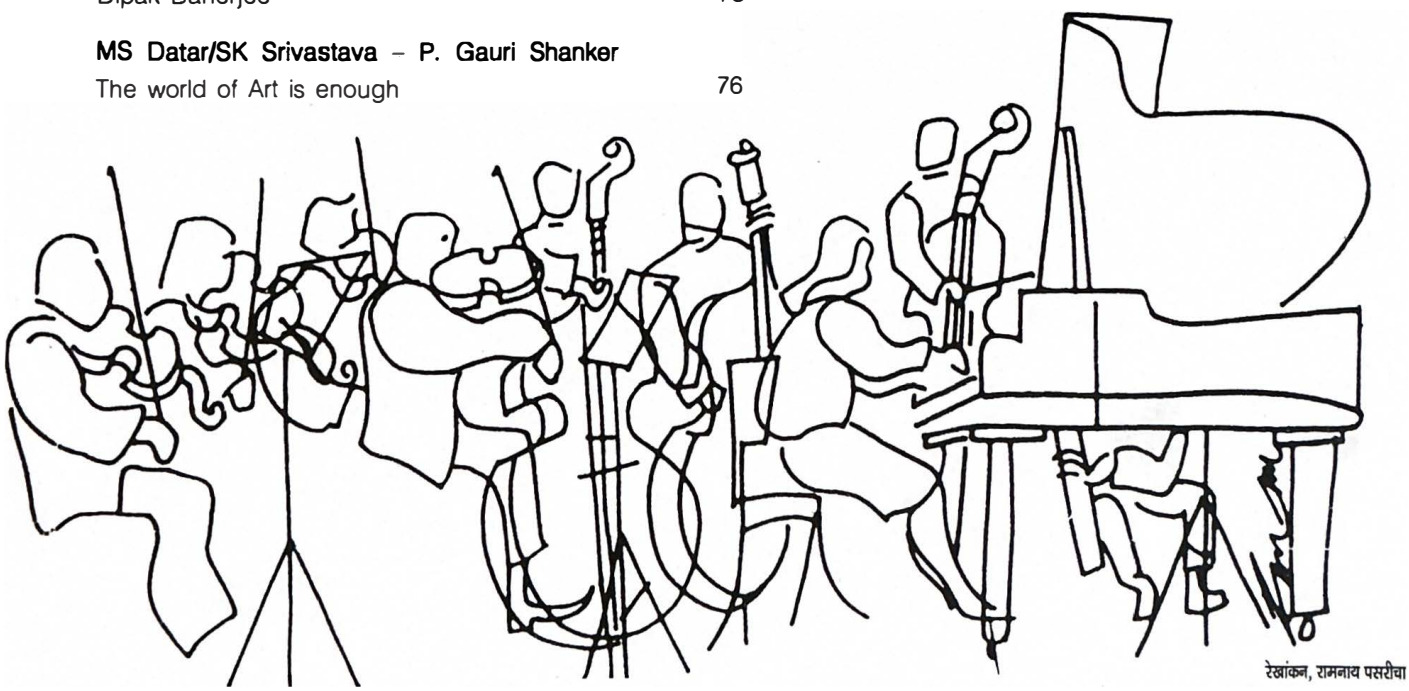

रेखांकन, रामनाथ पसरीचा
Drawing, Ram Nath Pasaricha
(रामनाथ पसरीचा को श्रद्धांजलि स्वरूप)

अवधेश मिश्र, रेखांकन, 2002, लखनऊ

Awadhesh Misra, Drawing, 2002, Lucknow

कला दीर्घा
KALA DIRGHA
दृश्य कला की छमाही पत्रिका, अप्रैल 2002, वर्ष 2, अंक 4
Six monthly Journal of Visual Art, April 2002, Vol 2, Issue 4

सम्पादकीय

इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश किए अभी बहुत दिन नहीं हुए, लेकिन इसके कई तरह के प्रभाव जीवन-जगत पर पड़ते, पूरे समाज और संस्कृति को प्रभावित करते दिखाई पड़ रहे हैं। खासतौर से संस्कृति के क्षेत्र में पुरातन सम्पदाओं से लेकर बिल्कुल नव्यतर कलात्मक उपलब्धियों का संसार बहुत व्यापक हुआ है। दुनिया चाहे गांव में बदल गई हो लेकिन प्राकृतिक और सांस्कृतिक सम्पदा को लेकर जो चिन्ता इस दुनिया के आकाओं में दिखाई दे रही है और तीसरी दुनियां के बहुत सारे देश उसे ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं, यह चकित करने वाली और थोड़ी, चिन्ताजनक स्थिति है। पिछले दिनों पिकासो का भारत आना अनायास ही नहीं है। इसके पीछे पूरी सांस्कृतिक विरासत और पूरे बाज़ार तंत्र का ऐसा गंठजोड़ है, जो तीसरी दुनिया में पिकासो के आने के बाद भी तीसरी दुनिया के आम प्रबुद्ध लोगों से कहीं दूर जा पड़ती है (इस प्रदर्शनी का केटलाग, प्रवेश शुल्क, कलाकृतियों की बिक्री और कला समीक्षकों को भी डायरी-कलम के लिए निषिद्ध वह स्थान जहां पिकासो जैसा अंतर्राष्ट्रीय ख़्याति का लगभग सर्वोच्च कलाकार पिछले बारह वर्षों से भी अधिक की अवधि के बाद भारत आया)। पिकासो का भारत आना ही नहीं जोगेन चौधरी, वी.एस. गायतोंडे, लक्ष्मा गौड़, एम.एफ. हुसैन, कृष्ण खन्ना, प्रभाकर कोल्टे, राम कुमार, तैय्यब मेहता, अकबर पदमसी, गणेश पाइन, लक्ष्मण श्रेष्ठ, रेडप्पा नायडू और सुल्तान अली आदि भारतीय चित्रकारों का अमेरिका से लेकर जर्मनी तक जाना एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक बिनिमय के साथ नई बाज़ार व्यवस्था में प्रवेश है। कई मायनों में ये संकेत भारतीय चित्रकारों को दुनिया के कैनवास पर ले जाकर कलाकारों की नई पीढ़ी को बहुत प्रोत्साहित भी करते हैं, ऊर्जा देते हैं और इस क्षेत्र के बड़े युवा वर्ग में घनघोर हताशा भी पैदा करते हैं।

कला की दुनिया में बाज़ार का इस तरह प्रवेश रोका तो नहीं जा सकता लेकिन उसके विभिन्न परिणामों को लेकर गंभीर बहस की आज बड़ी ज़रूरत है, क्योंकि चीजें जिस ओर जा रही हैं क्या उससे लगता नहीं कि तमाम कलाकृतियां एक बाज़ारू वस्तु के रूप में तब्दील हो रही है? इसका एक ताज़ा उदाहरण अपने देश से ही लिया जा सकता है- मार्च के प्रारंभ में दिल्ली की एक प्रतिष्ठित आर्ट गैलरी में पुराने सिनेमा पोस्टरों का प्रदर्शन इस नाम पर किया गया कि उनमें वे कला के मूल तत्व विद्यमान हैं, जो आज के सिनेमा पोस्टरों में दुर्लभ हैं। ऐसे साठ पोस्टरों की प्रदर्शनी दिल्ली में तो लगी ही विदेशों में भी ले जाने की योजना है और बाकायदा इसकी बोली भी लगाई जाएगी। अचानक सामान्य से काम किस तरह कला और धन के स्रोत बन जाते हैं, इसका यह महत्वपूर्ण उदाहरण है। कई बार विडम्बना जैसा लगता है कि एक तरफ पोस्टर, जिनके बनाने वालों में अधिसंख्य का नाम निश्चित तौर पर

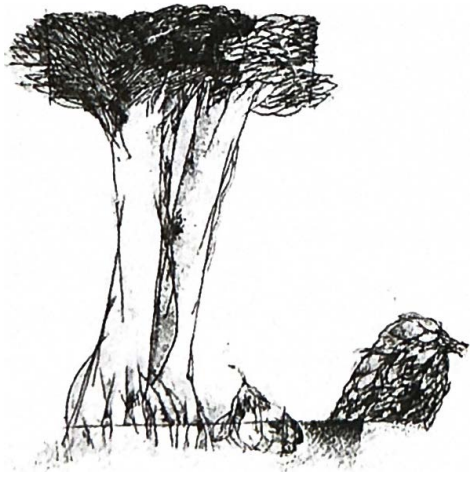

अंजन चक्रवर्ती, द बॉवर, 1996, कागज पर इंक और वाश
Anjan Chakraverty, The Bower, 1996, Ink and wash on paper

अब ज्ञात नहीं है, उसे लेकर काफी चहल-पहल पैदा हुई लेकिन बहीं जहांगीर साबावाला की प्रदर्शनी श्री धराणी आर्ट गैलरी, सैयद हैदर रज़ा और भूपेन खक्कर की प्रदर्शनियां वडेरा आर्ट गैलरी तथा जतिन दास के चालीस वर्षों के रेखांकनों का प्रदर्शन आल इंडिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी (आइफेक्स) में हुआ और उसकी चर्चा एक वर्ग में ही सिमट कर रह गई। सभी जानते हैं कि इनके बाज़ार बहुत ऊंचे हैं, पर ये प्रदर्शनियां पूरा देश न सही, उत्तर भारत के कलाकार समूह को पता चल पाईं या वे वहां जा पाए ? एक और उदाहरण के रूप में कोलकाता की सीमा कला दीर्घा में साइडवाइडर नाम से भारत और ब्रिटेन के कलाकारों की जो कलाकृतियां प्रदर्शित की गईं उसे हम कहां तक कला की प्रदर्शनी या मार्शल आर्ट की प्रदर्शनी कहेंगे? इस पर विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह प्रदर्शनी कला की प्रदर्शनी के रूप में आयोजित की गई। कोलकाता के बाद अब यह ब्रिटेन जाएगी। जाहिर है कि इस यात्रा के दौरान इन कृतियों के दाम और बोली को प्रमुखता दी जायगी।

भारत के अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्रकारों में सैय्यद हैदर रज़ा अस्सी वर्ष के हो गए हैं इस अवसर पर 'कला दीर्घा' परिवार की ओर से उन्हें अशेष बधाइयां और दीर्घजीवी होकर काम करने की शुभकामनाएं। हमारी अपेक्षा है कि देश की महत्वपूर्ण राजधानियों में जहां कला अकादमियां सक्रिय हैं, या राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र अपनी गतिविधियां संचालित करते रहते हैं, उन्हें भी रज़ा के कार्य प्रदर्शित करने चाहिए, ताकि कला की धारावाहिकता का पता कलाकारों व कला प्रेमियों को भी लग सके। आज कला के ओल्ड मास्टर्स को जानने की बड़ी ज़रूरत है।

इस तरह हमें लगता है कि राज्यों की कला अकादमियों की ज़िम्मदारी काफी बढ़ी हुई है अगर वे इन पर ध्यान नहीं देती हैं तो यह कला जगत के लिए दुर्भाग्य का ही विषय है, क्योंकि क्षेत्रीय स्तर से प्रतिभाओं को चुनकर राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में राज्य अकादमियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इनकी सक्रियता/निष्क्रियता या दृष्टि विशेष का सीधा असर संपूर्ण कला जगत पर पड़ता है।

हमने कोशिश की है कि कला दीर्घा के इस अंक में कला के विभिन्न पक्षों पर तार्किक, विश्लेषणात्मक और महत्वपूर्ण सामग्री दी जाय, जिससे कला जगत की हलचल तो पता लगे ही, इसकी भी जानकारी लोगों को हो कि भारत में ऐसे महत्वपूर्ण कलाकारों की कमी नहीं है, जो कला के गंभीर विषयों पर विचार-विमर्श के लिए तैयार रहते हैं। कला के क्षेत्र में ऐसे चिंतनशील कलाकारों के प्रति हम आभारी हैं। चाहते यह हैं कि कलाकारों की नई पीढ़ी में से भी ऐसे विचारक निकलें जो देश में होने वाली तमाम कला गतिविधियों की विडंबनाओं, प्रासंगिकताओं और नई चुनौतियों पर गंभीरता से चर्चा करें ताकि कला क्षेत्र में एक बहस की शुरुआत हो सके। इसके अभाव में हम देखते हैं कि किस प्रकार कला जगत अपने को निरंतर दुहरा रहा है और नई सामाजिक चुनौतियों से अलग रहकर पुनरुत्थानवाद की ओर ही अग्रसर हो रहा है।

वरिष्ठ कलाकार मोहम्मद सलीम के हम विशेष आभारी हैं, जिन्होंने समय की कमी के कारण फोन पर ही इन्टरव्यू दिया और अपनी कुछ बातें तत्काल लिखकर भेजने की कोशिश की। अल्मोड़ा जैसे सुदूर क्षेत्र में रहते हुए सलीम जैसे महत्वपूर्ण चित्रकार एक तरह से उपेक्षा के ही शिकार रहे हैं। अब उनकी सक्रियता की अपेक्षा है।

कला दीर्घा के लिए यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि पिछले अंक की ही तरह इस अंक का विमोचन भी लंदन (इस बार नेहरू सेंटर) में हो रहा है और रंग क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्तम्भ गिरीश कनार्ड उसमें विशेष रुचि ले रहे हैं। उनके प्रति भी हम आभारी हैं।

अचानक ही भारतवर्ष के महत्वपूर्ण चित्रकार वी.एस. गायतोंडे और रामनाथ पसरीचा हमारे बीच नहीं रहे, कला दीर्घा परिवार उनके प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

- अवधेश मिश्र

सिर्फ सामना किया, मुड़ के नहीं देखा

विनोद भारद्वाज

भारत के सबसे मशहूर और सुपरस्टार कलाकार मकबूल फिदा हुसैन की तुलना पिकासो से करना स्वाभाविक है। यह अलग बात है कि उन्हें भारतीय पिकासो कहने का अर्थ उन्हें पश्चिम की निगाहों से ही देखना है। दरअसल उन्हें 'भारतीय कलाकार हुसैन' ही कहना सही है। पिकासो कभी उनके 'रोल मॉडेल' जरूर रहे होंगे। हुसैन, फ्रांसिस न्यूटन सूजा, परितोष सेन आदि सभी कलाकार किसी न किसी रूप में पिकासो के जीवन और कला से प्रभावित रहे हैं। पर हुसैन सबसे अधिक भारतीय हैं, उनकी 'जमीन' भारतीय है, लैंप, छाता, शारीरिक मुद्राएं सभी कुछ भारतीय हैं। पर पिकासो की तरह वह खूब काम करने वाले कलाकार हैं, स्त्रियाँ उन्हें बराबर नयी रचनात्मक उर्जा देती रही हैं, कई विधाओं में वह एक साथ काम करते रहे हैं। फिल्म, कविता, वास्तुशिल्प, डिजाईन किसी भी विधा में वह एक अपनी अलग छाप छोड़ते रहे हैं।

पिछले दिनों प्रकाशित एक नई पुस्तक **'इन कनवरसेशन विद हुसैन पेंटिंग्स'** में हुसैन के बहुआयामी व्यक्तित्व और कला की एक आत्मीय झलक हमें मिलती है। इस पुस्तक को राशदा सिद्दीकी ने लिखा है। राशदा पिछले पच्चीस सालों से हुसैन की मित्रों में से हैं। हुसैन से उनकी पहली मुलाकात इमर्जेंसी के दिनों में एक दावत में हुई थी। लखनऊ में जन्मी राशदा लखनऊ विश्वविद्यालय से मानवशास्त्र में ऑनर्स कर चुकी हैं। लखनऊ कला महाविद्यालय से उन्होंने मूर्तिशिल्प की शिक्षा भी प्राप्त की है। हिन्दी, संस्कृत और अरबी जानने वाली राशदा के व्यक्तित्व पर अवध की संस्कृति का गहरा असर है। नज़ाकत और नफ़ासत की इस संस्कृति से हुसैन प्रभावित हुए। राशदा उनकी मित्र, प्रेरणा और 'म्यूज' (कलादेवी) बन गईं। दोनों के जीवन पर एक दूसरे का गहरा असर पड़ा। हुसैन की कलाकृतियां (जो इस पुस्तक में शामिल हैं) इस बात का प्रमाण है। हुसैन ने कई बार राशदा को अपनी कलाकृतियों का मॉडल बनाया है। अपनी कला यात्रा के कई दिलचस्प रहस्य उन्होंने राशदा को बताये हैं। इसीलिए यह पुस्तक अपनी स्कॉलरशिप के लिए नहीं - एक आत्मीय डायरी के रूप में पढ़ी और देखी जानी चाहिए।

राशदा ने हुसैन को चित्रों में अपनी आत्मकथा रचने के लिए प्रेरित किया था। इन जलरंग चित्रों की उन्होंने दिल्ली में एक प्रदर्शनी भी आयोजित की थी। इस चित्र शृंखला में हुसैन के बचपन की स्मृतियाँ बहुत अच्छी तरह से उभरी हैं। एक पुराने ज़माने को बड़ी खूबसूरती से याद किया गया है। कोई आश्चर्य नहीं है कि राशदा की पुस्तक में इस चित्र आत्मकथा के कई चित्र शामिल किये गये हैं। गुजरे हुए ज़माने की कई सुंदर तस्वीरें हैं। हुसैन के दादा अब्दुल पंदरपुर (महाराष्ट्र) में सड़क पर लैंप टीक करने का काम किया करते थे। हुसैन की कलाकृतियों में लैंप एक केन्द्रीय रूपक है। हुसैन की मां चाहती थीं कि एक दिन मेरा बेटा बड़ा होकर अपने पिता के जूते पहन सके। हुसैन इस बात को मर्मस्पर्शी ढंग से याद करते हैं कि मैं बड़ा हो कर नंगे पैर चलने वाला कलाकार बन गया। और मेरी मां बचपन में ही मुझे छोड़कर चली गईं। बचपन में हुसैन जब बीमार हुए, तो आधी रात को उनकी मां जैनब ने बीमार बच्चे की सात बार परिक्रमा ली ताकि बच्चा भला चंगा रहे।